शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2016

संचार माध्यमों से बदलता ग्रामीण जीवन

सुश्री संध्या शर्मा (शोधार्थी)
डॉ.भीमराव अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
महू, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत गावों का देश है और यहाँ के करीब 70 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। आज संचार माध्यमों का प्रभाव हमें केवल शहर ही नहीं बल्कि ग्रामीण जीवन में भी दिखाई पड़ता है। गांव में निवास करने वाली ग्रामीण जनता के जीवन स्तर में जो परिवर्तन आया है वह संचार माध्यमों की ही देन है। इस बदलाव को हम तीन प्रमुख रूपों में देखते हैं पहला संस्कृति में बदलाव, दूसरा पश्चिमीकरण और तीसरा आधुनिकीकरण। आधुनिकीकरण के तहत आने वाले टीवी, थियेटर्स, चलचित्र ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों को प्रभावित किया है। आज ग्रामीण भारत में शहरीकरण की प्रवृतियों के कारण नित-नये परिवर्तन हो रहे है। भारत में आई संचार क्रांति ने भारत की तस्वीर ही बदल कर रख दी है। इन्टरनेट के माध्यम से ग्रामीण व्यक्ति विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्र मे संचार क्रांति विकास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू बन गई है और हम देखते हैं कि आज ग्रामीण जीवन बदलाव की ओर अग्रसर है।

संचार माध्यम और बदलता ग्रामीण जीवन

संचार और समाज के बीच गहरा सम्बन्ध है। जब संचार के क्षेत्र में कोई परिवर्तन होता है तो सामाजिक व्यवस्था पर भी उसका सीधा असर पड़ता है। आधुनिक युग में प्रत्येक प्रगतिशील समाज पर संचार का प्रभाव दिखाई दे रहा है। मानव जीवन के सभी पक्षों की तुलना में संचार सबसे अधिक सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं। यही वजह है कि आधुनिक संचार ने ग्रामीण समाज पर अनुकूल प्रभाव डाला है। प्रारम्भिक समय में ग्रामीण संचार के लिये पत्र-पत्रिकाओं, अखबारों के माध्यम से देश दुनिया से जुडे रहते थे, लेकिन सूचनाएँ बहुत देर से प्राप्त होती थी। प्राचीन काल में ग्रामीणों की संचार की दुनिया बहुत छोटी थी। इसकी जगह अब टेलीफोन, मोबाइल, और इंटरनेट,वाई फाई ने लेकर ग्रामीणों की संचार की दुनिया का विस्तार कर दिया है। आज ग्रामीण क्षेत्र में आधुनिक संचार के माध्यम पर्याप्त हैं। जनसंचार माध्यमों अर्थात् रेडियो, दूरदर्शन, टेलीविजन, फिल्म, प्रेस, विज्ञापनों, नाटक आदि ने सूचना प्रवाह को बढ़ाया है। संचार ने सामाजिक स्तर पर लोगों के जीवन-स्तर में व्यापक बदलाव ला दिया है। आज समाज में संचार माध्यमों का ऐसा महत्वपूर्ण स्थान बन चुका है , जैसा पहले कभी नहीं था। जब गांवो में संचार सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नही थी तब ग्रामीण समाज शहरी क्षेत्रों से कटा रहता था , लेकिन वर्तमान में आधुनिक संचार के साधन आ चुके हैं। जिसका प्रभाव ग्रामीणजनों पर हम देख रहे हैं। इन संचार माध्यमों का प्रयोग ग्रामीणे कृषि के क्षेत्र की जानकारी, अन्य क्षेत्रों की जानकारी , बैंक लेन-देन, दूर दुनिया की ख़बरें जानने में करते हैं। रेडियो टी.वी. मोबाईल के माध्यम से संचार हो रहा है। अब पुराने परम्परावादी संचार संसाधन या तो समाप्त हो चुके हैं या समाप्त होने की

कगार पर हैं। किसान कॉल सेन्टर , ई-चौपाल, ग्राम ज्ञान केन्द्र , कल्याणी, कृषि दर्शन ये सभी ग्रामीणों को सूचनाएं प्राप्त कराने के लिए तैयार किए गए विभिन्न कार्यक्रम हैं। जिनसे ग्रामीण समाजजन जागरूक हो रहे हैं। उन्हें पूरी तरह से आभास होने लगा कि यह साधन केवल मनोरंजन के लिये नहीं , बल्कि रचनात्मक एवं ज्ञान के लिये भी है। संचार की वजह से ग्रामीणजनों की मानसिकता में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है।

गाँवों में संचार माध्यमों का प्रसार

1. ई-कृषि - भारत में आज भी कृषि मौसम और जलवायु पर निर्भर है। कृषि ग्रामीण क्षेत्र का आधार है। आज ज्यादा से ज्यादा किसान टी.वी. , रेडियो और मोबाईल पर मौसम संबंधी जानकारी देखते हैं, सुनते हैं, समझते हैं और उसके अनुसार अपनी फसल की योजना तैयार कर रहे हैं। किसान चैनल का भी इसमें बड़ा योगदान है। मिट्टी, खाद, बीज आदि की भी जानकारी किसान सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हासिल कर रहे है ।

2. टेलीविजन और ग्रामीण क्षेत्र - टी.वी. एक ऐसा माध्यम है जो अशिक्षित को भी शिक्षित करता है यानि कोई व्यक्ति निरक्षर ही क्यों न हो वह टेलीविजन के माध्यम से अपनी वैचारिक क्षमता बढ़ाता है और जागरुकता पैदा करता है। इसका प्रभाव हम ग्रामीण समाज के खान-पान , पहनावा, संस्कृति, नैतिकता, विचार सभी रूप में देख रहे हैं। टेलीविजन के माध्यम से आज ग्रामीण जनता अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई है। इस पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन,कार्यक्रम जागरुकता पैदा कर रहे हैं टी.वी. के कारण गाँव के लोगों का पहनावा तो बदला ही है साथ ही साथ सोच में भी परिवर्तन आया है। अब वहाँ भी जिन्स , टी. शर्ट पहने हुए युवक-युवतियाँ दिखाई देती है।

3. शिक्षा और गांव- जिस ग्रामीण जीवन की बदलती तस्वीर आज हम देख रहे हैं वहां पहले शिक्षा को बोझ समझा जाता था लेकिन अब प्रत्येक ग्रामीण अपना बेटा हो या बेटी उसे शिक्षा दिलाने पर जोर दे रहा है। गांवों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। यही नहीं सरकार द्वारा ग्रामीण छात्र -छात्राओं के लिए चलाई जा रही योजनाओं के चलते भी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार हुआ है। जिसकी वजह से अशिक्षा दूर हुई है और रुढीवादिता का अंत होने लगा है। शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए संचार माध्यमों का प्रभाव साफ दिखाई देता है।

4. ग्रामवाणी - ग्रामीण समाज आज अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हुआ है। इसकी मुख्य वजह है संचार माध्यम। जिनसे शिक्षा पाकर और जागरुक होकर केवल अपना ही नहीं बल्कि अपनों के स्वास्थ्य का भी खयाल रखा जा रहा है। ग्रामीण स्वास्थ्य सुरक्षा के क्षेत्र में ग्रामवाणी लगभग देश के 70 गाँवों में कार्य कर रही है। इसमें गाँववासियों को अपने और परिवार के स्वास्थ्य के संबंध में बेहतर परामर्श घर बैठे प्राप्त हो रहा है।

5. इंटरनेट और ग्रामीण विपणन - इंटरनेट के कारण किसानों को अनाज के कुल उत्पादन, क्राप पेटर्न, बाजार मूल्य, बाजार मांग आदि का शीघ्र पता चल रहा है , जिससे जानकर किसान इस के अनुसार उत्पादन एवं बेहतर विपणन कर अच्छा लाभ कमा रहे हैं। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के कारण कृषि विपणन और बेहतर हुआ है।

6. इंटरनेट एवं शाखाविहीन बैंकिंग - इंटरनेट के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ बैंकों की पहुँच आज भी नहीं है। शाखाविहीन बैंक के माध्यम से

ग्रामीण बैंकों से लेन-देन करने में सक्षम हो रहे हैं। जिन्हें ई-बैंकिंग की कार्यवाही नहीं आती है। शुरू में वे गाँव में ही किसी सेवा प्रदाता की सहायता से यह कार्य कर रहे हैं। कुछ लोग इसे सीख चुके हैं , वे स्वयं धन का हस्तांतरण इस माध्यम से कर रहे हैं।

7. एम-बैंकिंग - आज गाँवों में भी कुछ युवाओं का प्रतिशत ऐसा हो गया है , जो एम-बैंकिंग, ई-टिकिटिंग, ई-शापिंग, ई-रिजर्वेशन आदि का उपयोग कर समय बचा कर गाँवों में ही इस सुविधा का उपयोग कर रहे हैं।

चुनौतियाँ एवं सुझाव

संचार माध्यम और सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हमारा ग्रामीण परिवेश बदल रहा है फिर भी इस दिशा में गति कम है। इसका सबसे बड़ा कारण गाँवों में आज भी अशिक्षा का प्रतिशत अधिक है। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के लिये विद्युत सप्लाई लगातार होना आवश्यक है। हमारे कई जिले ऐसे हैं , जहाँ 100 प्रतिशत ग्रामीण विद्युतीकरण तो हो चुका है , परंतु विद्युत सप्लाय 6 से 8 घंटे ही है। इंटरनेट कनेक्टिविटी ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी चुनौती है। गाँवों में आज भी आधुनिक संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के लाभ प्राप्त करने के लिए वित्तीय संसाधनों की कमी है।

निष्कर्ष

आधुनिक संचार माध्यमों का ग्रामीण जीवन पर दोहरा प्रभाव पडा है , अनुकूल एवं प्रतिकूल। वर्तमान समय में डाक , टेलीफोन, रेडियो, दूरदर्शन, टेलीग्राफ, फैक्स, प्रेस ब्यूरो , कम्प्यूटर, ई-मेल, मोबाईल आदि संचार माध्यम ग्रामीण समाज के सुगम संचार हेतु सहायक है। इन माध्यमों का समाज पर सकारात्मक प्रभाव अधिक दिखता है। आज कृषि , शिक्षा, स्वास्थ्य आदि से संबंधित समस्या का हल अंतरजाल पर आसानी से उपलब्ध है जिसका उपयोग ग्राम में निवास करने वाली जनता कर रही है। इतना ही नहीं संचार माध्यमों की पर्याप्तता के कारण ग्रामीण समाजजन जागरूक हुए हैं। आज ग्रामीणों की शिक्षा का स्तर में बहुत सुधार आया है। मानव समाज में संचार के विकास का प्राचीनकाल में जो सिलसिला प्रारम्भ हुआ , वह वर्तमान में भी चल रहा है और भविष्य में भी चलता रहेगा। जनसंचार के युग में आई नयी तकनीक ने सूचना पाने के कई ऐसे संसाधनों को जन्म दिया है जिन्होंने ग्रामीण समाज के विकास में अहम भूमिका निभाई है साथ ही ग्रामीण जीवन को बदल कर रख दिया है। जिन ग्रामीण इलाकों में संचार का प्रयोग होने लगा है वहां के लोगों में चीजों को देखने और समझने का नजरिया बदला है। अब किसान और उसका बेटा दोनों ही इस आधुनिक संचार के माध्यम से जुड़ कर अपना विकास कर रहे हैं जिसके परिणाम स्वरुप हम देखते हैं कि ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति में भी तेजी से बदलाव आया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *गुप्ता एम.एल. एवं शर्मा डी.डी. 1996 समाजशास्त्र, ग्रामीण समाज, साहित्य भवन पब्लिके शंस हास्पिटल रोड़ आगरा*

2. *मिश्र ए.के., मीडिया एक क्रांतिकारी परिवर्तन,. ग्रामीण अंचल के संदर्भ में मासिक पत्रिका मध्यप्रदेश संदेश मध्यप्रदेश शासन का मासिक प्रकाश अप्रैल 2011.*

3. *प्रसाद अवध 1991, गाँवों में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन हेतु मीडिया का योगदान महत्वपूर्ण आलेख, रावत पब्लिकेशन जयपुर।*

4. *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, संचार के साधन सतत शिक्षा विद्यापीठ 2009*

5. *भारत में ग्रामीण समाज - डॉ. डी.एस.बघेल*